International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 10, Issue 03, March 2023
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

बौद्ध शिक्षा दर्शन की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता का अध्ययन

डॉ. बी. के. गुप्ता, (प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष)

वन्दना सिंह, शोधकर्त्री

जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बाराबंकी (उ.प्र.)

सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र बौद्ध शिक्षा दर्शन की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता का अध्ययन पर प्रकाश डाला गया है। बौद्ध शिक्षा दर्शन मानव जाति के कल्याण के लिए मानव मूल्यों को जाग्रत करने में तथा मानव मूल्यों की स्थापना करने में सक्षम हैं। बौद्ध शिक्षा में निहित शान्ति, अहिंसा व वसुधैव कुटुम्बकम के सिद्धान्त प्रजातात्रिक संगठन की प्रवृत्ति छात्रों व अध्यापकों का त्याग पूर्ण जीवन आदि ऐसे अनेक तत्व है जो आज भी उपयोगी सिद्ध हो सकते है। बौद्धकालीन शिक्षा व्यवस्था का प्रमुख उद्देश्य नैतिकता, चरित्रगत विकास, व्यक्तित्व का विकास तथा जीविका की तैयारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में पूर्णतया प्रासंगिक है।बौद्ध शिक्षा में निहित शांति, अहिंसा व वसुदेव कुटुम्बकम के सिद्धान्त, प्रजातांत्रिक संगठन प्रवृत्ति छात्र व अध्यापकों का त्यागपूर्ण जीवन आदि अनेक ऐसे तत्व हैं जो आज के समय में बहुत ही आवश्यक हैं।

प्रस्तावना

भारत में दर्शन की एक लम्बी परम्परा है। यहाँ धर्म और दर्शन का गहरा सम्बन्ध हमेशा से रहा है। भारतीय जीवन और धर्म पर दर्शन ने गहरा प्रभाव छोड़ा है। भारतीय दर्शन परंपरा के अधिकांश सम्प्रदाय किसी न किसी धर्म या सम्प्रदाय से जुड़े रह हैं। कुछ दर्शनों से तो नये

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

धर्मों का अविर्भाव भी हुआ है। भारत में जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए दर्शन का सृजन हुआ है। जब मानव ने अपने आप को दुःखों के चक्रव्यूह में घिरा पाया तब उसने पीड़ा और क्लेश से मुक्ति पाने हेतु दर्शन को अपनाया। भारतीय दर्शन की दृष्टि मैं कौन हूँ ? यह संसार क्या है ? हम सबको उत्पन्न करने वाली वह दिव्य शक्ति कौन है? यहाँ से प्रारम्भ होती है और दर्शन इन प्रश्नों और जिज्ञासाओं के उत्तर खोजने का कार्य अलग–अलग दार्शनिकों तथा दर्शन सम्प्रदायों ने किया। चाहे फिर वह आस्तिक दर्शन हो या नास्तिक, हिन्दू दर्शन हो या अहिन्दू दर्शन। भारतीय चिन्तन के अन्तर्गत अनेक दर्शनों ने अपना स्थान बनाया। चिन्तन की इस सुदीर्घ यात्रा में बौद्ध दर्शन का भी विशेष महत्व है ।

बौद्धकालीन शिक्षा व्यवस्था का प्रमुख उद्देश्य नैतिकता, चरित्रगत विकास, व्यक्तित्व का विकास तथा जीविका की तैयारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में पूर्णतया प्रासंगिक है। बौद्धकाल में प्रचलित छात्रअध्यापक सम्बन्धों को यदि पुनर्जीवित किया जाय तो वर्तमान शिक्षा संस्थाओं में दिन प्रतिदिन होने वाली अभद्रता, छात्र दंगे स्वतः ही समाप्त हो जायेंगे। यद्यपि बौद्ध धर्म के उपदेश बौद्धकालीन शिक्षा व्यवस्था के केन्द्र बिन्द थे, बौद्ध शिक्षा में निहित शांति, अहिंसा व वसुदेव कुटुम्बकम के सिद्धान्त, प्रजातांत्रिक संगठन प्रवृत्ति छात्र व अध्यापकों का त्यागपूर्ण जीवन आदि अनेक ऐसे तत्व हैं जो आज की शिक्षा व्यवस्था में बहुत ही प्रांसगिक हैं।

अध्ययन की उपयोगिता

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आवश्यकता इस बात की है कि आधुनिकीकरण के साथ–साथ कदम से कदम मिलाकर चलना होगा तथा अपनी सांस्कृतिक विरासत को ध्यान रखकर ही मानवीय मूल्यों, आदर्शों, नैतिक गुणों तथा आध्यात्मवादी भावनाओं को अक्षुण्य रख सकते हैं। आज की वर्तमान समस्या छात्रों में बेराजगारी, अनुशासनहीनता, कर्तव्य , अंधकारमय भविष्य, भ्रष्टाचार की भावना, आदर्शों के प्रति दूराव की भावना तथा अश्लील प्रदर्शन है जो निश्चय ही निकट भविष्य में विध्वंसकारी, तथा प्रलयकारी होगी। स्पष्ट है कि शिक्षा के द्वारा ही इन समस्याओं को दूर जा सकता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा की यही चुनौती है कि वह इन समस्याओं दूर

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**

करे। उपरोक्त वर्णित समस्याओं को दृष्टिगत करके यह कहा जा सकता है कि परिवेश में बौद्ध दर्शन एवं उनकी शिक्षा व्यवस्था पुनः प्रासंगिक हो गयी है। बुद्ध एवं समन्वयवादी विचारों के परिपोषक थे। वे समस्त प्राणी के हितों एवं उनके से अभिभूत होकर अपना दर्शन प्रकट किये। आज जहाँ देश के विभिन्न जाति व वर्ग के बीच समन्वय का अभाव दिखाई दे रहा है। ऐसे समय में ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' तथा ''सर्वतो हिताय'' की संकल्पना पर बौद्ध दर्शन और उसकी प्रासंगिकता अति महत्वपूर्ण दिखाई दे रही है।

बौद्ध शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता

बौद्धकालीन शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बौद्ध धर्म का प्रचार व प्रसार करना था तथापि बौद्ध शिक्षा के अन्य उद्देश्य जैसे नैतिक चरित्र का विकास, व्यक्तित्व का विकास तथा जीविका की तैयारी आज भी पूर्णतया प्रासंगिक है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली को पूर्ण बनाया जा सकता है बौद्ध शिक्षा प्रणाली के ''दस सिक्खा पदानि'' अर्थात् दस शिक्षा पद आज भी पूर्णतया प्रासंगिक और सार्थक हैं। इन दस आदेशों का यदि छात्रों द्वारा पालन किया जायेगा तो वर्तमान समय के साम्प्रदायिक वातावरण, भ्रष्ट आचरण, मादक पदार्थों का प्रचलन, झूठ बोलन, पर निन्दा आदि का स्वतः ही निवारण हो जायेगा। महात्मा गौतम बुद्ध के उपदेश बौद्धकालीन शिक्षा प्रणाली के केन्द्र बिंदु थे परन्तु बौद्ध शिक्षा में निहित शान्ति, अहिंसा व वसुधैव कुटुम्बकम के सिद्धान्त प्रजातात्रिक संगठन की प्रवृत्ति छात्रों व अध्यापकों का त्याग पूर्ण जीवन आदि ऐसे अनेक तत्व है जो आज भी उपयोगी सिद्ध हो सकते है। वैभव की चमक–दमक हिंसा से मुक्त परिवेश, धन व अधिकार की लालसा तथा घृणा व द्वेषों से परिपूर्ण वर्तमान जीवन मे बौद्ध शिक्षा के ये तत्व सार्थक योगदान कर सकते है।

बौद्धकालीन शिक्षा में आध्यात्मिक विकास पर अधिक जोर न देकर नैतिकता अथवा शील पर अधिक ध्यान दिया गया। वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वागिक विकास करना है। वर्तमान समाज एवं परिस्थिति में ऐसे उद्देश्यों की उपायदेता बहुत बड़ी मात्रा में अर्थपूर्ण हो सकती है। आधुनिकीकरण के इस दौर में मनुष्य अपने आचार नैतिकता तथा

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

संस्कार को पीछे छोड़ता चला आया है। अगर बौद्धकालीन शिक्षा के उददेश्यों एवं वर्तमान शिक्षा के उददेश्यों ने सामंजस्य किया जाये तो सामाजिक अन्तर्सम्बन्ध काफी हद तक सुदृढ हो सकते हैं। ये अर्थपूर्ण तथा विकासोन्मुख समाज का निर्माण हो सकता है।

जीवन में ही ''निर्वाण'' की प्राप्ति अर्थात दुखों से छुटकारा अज्ञानता की समाप्ति मनुष्य के सही अस्तित्व की परख इत्यादि ऐसे गुण हैं जो वर्तमान शिक्षा को प्रभावी बना सकते हैं। बौद्ध शिक्षा के पाठयक्रम जैसे धर्म, दर्शन, शिल्पकला, सैनिक शिक्षा तथा साहित्य व्यापार और कृषि का अध्ययन वर्तमान समय में उतने ही प्रासंगिक है जितने बौद्धकालीन परिस्थितियों में था।

वर्तमान समय में शिक्षण विधि में वाद–विवाद, सेमीनार, व्याख्यान, दल शिक्षण आदि सभी विधियां बौद्धकालीन शिक्षा की ही देन मानी जा सकती हैं। यद्यपि उस समय शिक्षण का कार्य प्रायः मौखिक होता था। छात्र गुरू के पास बैठकर शांतिमय वातावरण में शिक्षा ग्रहण करते थे। उसके साथ–साथ प्रश्नोत्तर, वाद विवाद, शास्त्रार्थ तथा देशाटन आदि के द्वारा छात्र ज्ञान ग्रहण करते थे। आधुनिक परिवेश में विज्ञान तथा तकनीकी के इस युग में शिक्षक की महत्ता धीरे–धीरे कम होती जा रही है। अनुदेशन को ज्ञान प्राप्ति का साधन बनाया जा रहा है। परन्तु यहां ध्यान देना होगा कि अनुदेशन से मात्र व्यक्तित्व का विकास नहीं किया जा सकता है। इसके लिये छात्र और शिक्षक संबंधों पर गौर करना होगा। बौद्ध शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा की सर्व सुलभता, शिक्षण का बहुयामी स्वरूप तथा शल्य चिकित्सा भी महत्वपूर्ण थी। तार्किक शिक्षा की व्यवस्था तथा व्यवसायिक शिक्षा की व्यवस्था आदि कुछ ऐसे महत्वपूर्ण कदम थे जो आज की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में भी प्राप्त होते हैं। अतः हम यह कह सकते हैं कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में बौद्ध शिक्षा व्यवस्था का महत्वपूर्ण योगदान है।

वास्तव में भगवान बुद्ध का शिक्षा दर्शन आधुनिक काल भी समग्र विश्व में भारतीय दर्शन का सार्वकालिक प्रतिनिधि दर्शन माना जाता है। बौद्ध शिक्षा में बालक की विभिन्नता को स्वीकार किया गया है, जो आज भी शिक्षा व्यवस्था प्राप्य है। बौद्ध शिक्षा व्यवस्था का मानना

था कि बालक जन्म के समय में कुछ मूल प्रवृत्यिों को पुर्नजन्म के आधार पर लेकर आता है। आज भी शिक्षा मनोविज्ञान बालक की मूल प्रवृत्यिों को स्वीकार करता है तथा बालक की विभिन्नता के आधार पर शिक्षा देना चाहता है। बौद्धकालीन शिक्षा दर्शन में बालक के व्यक्तिव का समादर करते हुये रूचियों, क्षमताओं, योग्यताओं के अनुरूप शिक्षा देने की बात की गई है। जो आज की शिक्षा व्यवस्था में विद्यमान है बौद्ध शिक्षा जातिप्रथा में विश्वास नहीं करती थी, अतः सभी बच्चों को समान रूप से शिक्षा देने के लिये सहमत थी । वर्तमान समय में जहां विकास की प्रक्रिया में जातिवाद का निरोध व विरोध होना चाहिए वहीं जातिवाद के नारे तथा इसे अप्रत्यक्ष रूप से बढावा मिल रहा है। ऐसे समय हमें उन सिद्धांतों का अनुकरण करना चाहिए जो ऐसी प्रथा व कुव्यवस्था को समाप्त कर सके। इसी प्रकार बौद्ध शिक्षा व्यवस्था में स्त्री पुरुष की शिक्षा में विभेद नहीं किया जाता था। जो आज संविधान में भी इस बात का उल्लेख है कि स्त्रियां पुरुषों के समान अधिकार रखती है

बौद्ध दार्शनिक जन्म के आधार पर मनुष्य–मनुष्य में भेद नहीं करते इसलिए उन्होंने सबके लिए प्रारम्भिक शिक्षा का विधान किया है। स्पष्ट है कि वे जन शिक्षा के समर्थक थे। परन्तु मानसिक व बौद्धिक दृष्टि से वे मनुष्य–मनुष्य में भेद करते थे शिक्षा की व्यवस्था केवल मेधावी एवं योग्य छात्रों के लिए ही करते थे।

बौद्ध शिक्षा में शिक्षा को प्रगति हेतु शिक्षक को आवश्यक एवं महत्वपूर्ण माना गया था। शिक्षा का स्थान सम्मानानक था। आज की शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण है। बालक की मूलप्रवृत्यिों के परिमार्जन एवं उसके कवितव का निर्माता होता है। समाज एवं व्यक्ति के व्यक्तित के निर्माण में शिक्षक की भूमिका उतनी ही महत्वपूर्ण है कि जितनी शरीर के निर्माण में हड्डियों एवं मासपेशियों की होती है। आज विज्ञान की गति अपनी चरम अवस्था पर है दिन प्रतिदिन मशीनीकरण की होड बढ़ती जा रही है। शिक्षा क्षेत्र में भी कम्प्यूटर एवं मशीनों क भरमार सी है। ऐसी अवस्था में कुछ मायनों में शिक्षण की प्रक्रिया में शिक्षक को गौण कर दिया जाता है परन्तु शिक्षक के अभाव में शिक्षा का आधार ही खत्म हो जायेगा। जिस प्रकार शिक्षालयों में अनुशासन संबंधी कार्यों के लिये आचार्य हुआ करते थे आज भी आज की शिक्षा

व्यवस्था की पूरी जिम्मेदारी प्राचार्यों की होती है। बौद्ध शिक्षा के उपाध्याय आज अध्यापक के रूप में हैं। अतः शिक्षक का स्थान बौद्ध शिक्षा की ही भांति आज भी प्राप्त है।

बौद्धकालीन शिक्षा व्यवस्था में विद्यालय का स्वरूप व्यवस्थित एवं अव्यवस्थित दोनों प्रकार का था। व्यवस्थित रूप में विद्यालय तथा विश्वविद्यालय थे तथा अव्यवस्थित क्रम में देशाटन एवं भ्रमण करके शिक्षा प्रदान किया करते थे। आज भी हमारे समाज में इस प्रकार की शिक्षा का स्वरूप विद्यमान है, जिसे हम औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा की संज्ञा देते है।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि बौद्ध दर्शन के शैक्षिक विचार वर्तमान शिक्षा में बहुत ही उपयोगी है। इस धर्म दर्शन के विचारों का पालन कर समाज में समरसता एवं लोगों के बीच मधुर सम्बन्ध कायम किये जा सकते हैं। बौद्ध शिक्षा प्रणाली अपने समय की संसार की सर्वश्रेष्ठ शिक्षा प्रणाली थी परन्तु आज के भारतीय समाज के स्वरूप एवं उसकी भविष्य की आकांक्षाओं एवं सम्भावनाओं की दृष्टि से उसके कुछ उपादेय तत्व है जिन्हें उसके गुणों की संज्ञा दी जाती है। इन उपादेय तत्वों को ग्रहण कर अपनी वर्तमान शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

संदर्भ सूची

- अंकिता (2018). भारतीय शिक्षा के विकास में बौद्ध धर्म की भूमिका। एन इंटरनेशनल जरनल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलोजी, 8(1), 23—31.
- उपाध्याय, जगन्नाथ (2011). *बौंद्ध संस्कृति बनाम ब्राह्मणवाद,* नई दिल्ली : सम्यक् प्रकाशन.
- बाला, रजनी और गिल, अलीशा (2019). भारत में बौद्ध शिक्षा प्रणाली की प्रासंगिकता का अध्ययन। स्कोलरली रिसर्च जरनल फॉर ह्यूमेनिटी साइन्स एण्ड इंग्लिश लेग्वेज, 7(34), 9143—9164.

- चौधरी, मनोज (2018). इक्कीसवीं सदी में बौद्ध दर्शन की शिक्षा में उपादेयता। ओएसआर जरनल ऑफ ह्यूमेनिटीज एण्ड सोशल साइन्स, 23(8), 66–74.
- डेंग (2022). बौद्ध शिक्षा प्रणाली के मूल्य का अध्ययन। एडवान्सेज इन साशल साइन्स, एजुकेशन एण्ड ह्यूमेनिटीज रिसर्च, 575, 293–298.
- कौर, सुरजीत (2019). गौतम बुद्ध के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन। इंटरनशनल जरनल ऑफ 360 डिग्री मेनेजमेन्ट, 7, 132–136.
- कुमार, वीरेन्द्र (2019). बौद्धकालीन शिक्षा की वर्तमान शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता पर अध्ययन। इंटरनशनल रिसर्च जरनल ऑफ मेनेजमेन्ट सोशियोलोजी एण्ड ह्यूमेनिटी, 10(7), 325–331.
- पाण्डेय, अजय (2011). *बौद्ध संस्कृति का वैश्विक प्रभाव,* भोपाल : एकेडमिक बुक हाउस.
- प्रियंका (2017). बौद्ध शिक्षा और ब्राह्मण शिक्षा का सामाजिक दर्शन एवं प्रभाव का भारतीय संदर्भ में अध्ययन। जरनल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलोजी एण्ड इनोवेटिव रिसर्च, 4(9), 674–679.
- रविचंद्र (2014). बौद्ध धर्म और आधुनिक विश्व में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन। परिपेक्ष इंडियन जरनल ऑफ रिसर्च, 3(7), 215–217.
- श्याम (2016). आधुनिक भारत में बौद्ध धर्म का सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक योगदान। इंटरनेशनल जरनल ऑफ एडवान्स्ड एजुकशनल रिसर्च, 1(5), 6–9.
- सिंह, कुलदीप (2021). विज्ञान और प्रौद्योगिकी के वर्तमान युग में बौद्ध दर्शन और शिक्षा की प्रासंगिकता। इंटरनेशनल जरनल फॉर इनोवेटिव रिसर्च मल्टीडिसिप्लनरी फिल्ड, 7(4), 200–202.
- तारानाथ (1997). *भारत में बौद्ध धर्म का इतिहास,* पटना : अनु. रिडजिन लुण्डुप लामा।
- युंग (2003). आधुनिक विश्व के लिए बौद्ध धर्म शिक्षा का अध्ययन। जरनल ऑफ ह्यूमेनिटीज बुद्धिज्म, 4, 284–293.

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)